आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2352 • उदयपुर, बुधवार 2 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

'यूरेनस ग्रह से निकल रहीं एक्स-रे विकिरणें

अंतरिक्ष रहस्यों को भंडार है। खगोलविदों को यूरेनस (अरुण ग्रह) की ओर से एक्स–रे विकिरण की रोशनी आती दिखाई दी हैं। जर्नल ऑफ जियोफिजिकल रिसर्च में प्रकाशित ताजा शोध में यह दावा किया गया। अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने चंद्र स्पेस टेलीस्कोप से 2002 और 2017 में प्राप्त अवलोकन के आधार पर रिपोर्ट तैयार की हैं। हालांकि बृहस्पति और शनि ग्रह भी सूर्य के कारण एक्स–रे का उत्सर्जन करते हैं। यह वैसा ही है जैसे पृथ्वी का वातवरण सूर्य की रोशनी बिखेरता है। यूरेनस की एक्स–रे सूर्य के प्रकाश के बिखराव का नतीजा नहीं है। इसका स्रोत ही कौतूहल का विषय है।

यूरेनस से निकल रहे एक्स–रे का स्रोत ग्रह पर ही मौजूद होने की संभावना है। वैज्ञानिकों को जल्द इस पहेली के सुलझने की उम्मीद है। वैज्ञानिकों को 2002 में यूरेनस के अवलोकन के दौरान एक्स–रे उत्सर्जन का स्पष्ट संकेत मिला था। 2017 की तस्वीर में एक्स–रे की एक ज्वाला को देखा गया। दोनों तस्वीर मिलाने पर पाया गया कि यूरेनस उसी दिशा मे था, जहां वह 2002 के अवलोकनों में था।

दो संभावित वजह आईं सामने

यूरेनस से एक्स–रे निकलने की दो संभावित व्याख्याएं दी गई हैं। पहली, यूरेनस के छल्लों से ग्रह के पास के अंतरिक्ष वातावरण में मौजूद आवेशित कण, जैसे इलेक्ट्रॉन और प्रोटोन में टकराव हो सकता है। इससे एक्स–रे निकल सकती है। दूसरी, एक्स–रे यूरेनस ग्रह के ऑरोर से भी आ सकती है। विस्तृत शोध की जरूरत बताई गई है।

वैज्ञनिकों के सामने कठिनाइयां

वैज्ञानिकों के सामने कई कठिनाइयां है। यूरेनस का असामान्य अक्ष, जिस पर वह घूमता है और उसका मैग्नेटिक फील्ड जटिलता पैदा कर रहा है। अन्य ग्रहों की अपेक्षा यूरेनस अपने अक्ष के समानांतर घूर्णन करता है। मैग्नेटिक फील्ड भी झुकाव के कारण केंद्र से हटकर है।

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

40 हजार से ज्यादा का मददगार बना नारायण सेवा

कोरोना रेड अलर्ट लॉकडाउन के दौरान नारायण सेवा संस्थान हजारों, बेरोजगार, दुःखी बीमार और संक्रमितजनों को उनकी आवश्यकता के मुताबिक उनके घर तक निःशुल्क सेवाएं पहुंचा रहा है। पिछले माह की 19 तारीख से अब तक निःशुल्क भोजन, दवाई, ऑक्सीजन, एम्बुलेंस और सेनेटाइजेशन की सेवाएं शहर में हजारों लोगों तक पहुँचाई जा चुकी है।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव' की प्रेरणा से संक्रमितों के घर 39544 भोजन पैकेट, 208 ऑक्सीजन सिलेंडर, 2071 कोरोना दवाई किट, 106 हाइड्रोलिक बेड, बेरोजगार और निर्धन परिवारों को राशन किट जिनमें आटा, चावल, दाल, तेल, शक्कर और मसाले आदि है, वितरित किए गए है। इन सेवा प्रकल्पों के सुचारू संचालन के लिए संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल के निर्देशन में 80 सदस्य टीम का गठन किया गया है। उन्होंने कहा कि संस्थान के हेल्पलाइन नंबर पर रोजाना 100 से अधिक कॉल्स प्राप्त हो रही है जिन्हें तत्काल सेवाएं मुहैया की जा रही है। संस्थान का मकसद ही यही है कि इस कठिन घड़ी में ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंदों तक उक्त सेवाएं पहुचांई जाए।

नारायण सेवा ने 40 मजदूर परिवारों को दिया राशन

पिछले 36 सालों से मानव सेवा मंत्र के साथ हर जरूरतमन्द को मदद पहुंचाने वाली नारायण सेवा संस्थान ने गत शुक्रवार को उमरड़ा में राशन वितरण शिविर का आयोजन किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि कोरोना लॉकडाउन के चलते बेरोजगार हुए मजदूर परिवारों के सेवार्थ निदेशक वंदना जी अग्रवाल के नेतृत्व में शिविर लगाया गया। जिसमें 40 मासिक राशन किट वितरित हुए। इस कीट में एक माह के लिये आटा, चावल, दाल, शक्कर और मसाले इत्यादि है। शिविर में दिलीप सिंह जी, मोहित जी मेनारिया आदि ने सेवाएं दी।

संस्थान द्वारा दिव्यांग दम्पती व बच्चे की मदद

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांग धर्माराम (13) और रमेश मीणा (28) को उनकी विपरीत परिस्थितियों में तात्कालिक मदद पहुँचाई है। कानोड़ तहसील जिला उदयपुर (राज.) के तालाब फलां निवासी रमेश पुत्र वाला मीणा का घर आग लगने से स्वाह हो गया था।

संस्थान ने अनाज, वस्त्र, कम्बल मसाले आदि देकर उसकी मदद की। रमेश और उसकी पत्नी लोगरी दोनों ही जन्मजात दिव्यांग है। चार बच्चों के साथ गृहस्थी को चलाना, पहले से ही इसके लिए भारी था और अब घर के जल जाने से उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। वहीं मंगलवार को पीआरओ विपुल शर्मा को फुटपाथ पर मिले धर्मा पुत्र कंवरलाल को व्हीलचेयर, कपड़े, बिस्किट एवं राशन देने के साथ उसका सीपी टेस्ट करवाया। इस बालक की दो वर्ष पूर्व बीमारी के दौरान आवाज और आंखों की रोशनी चली गई थी। अब इसके पांव भी नाकाम हो गए है। डॉक्टर्स टीम आवश्यक चिकित्सा के लिए प्रयासरत हैं।

संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने कहा कि विषमता में परेशान दिव्यांगों एवं दुखियों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए संस्थान तत्पर है। इस अवसर पर विष्णु जी शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़, दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी मौजूद रहे।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक नि:शुल्क 208 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

'घर – घर भोजन' सेवा

अब तक घर–घर नि:शुल्क 39,544 भोजन पैकेट वितरित

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 2071 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 203 जन लाभान्वित

हैड्रोलिक बेड सेवा

106 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध

कोरोना प्रभावित 29,803 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

हादसे में गंवा दिए दोनों हाथ, गोल्ड समेत 150 से ज्यादा जीत चुके हैं पदक....

केरियर डेस्कटन जिनके पास हौसला होता है कामयाबी उन लोगों के पास जरूर आती है। रोल मॉडल में आज हम आपको एक ऐसे खिलाड़ी की कहानी बता रहे हैं जिसने कई मुश्किलों का सामना किया लेकिन हार नहीं मानी। इस खिलाड़ी का नाम है पिन्टू गहलोत। गहलोत ने बताया कि हमारा जीवन अप्रत्याशित है, लेकिन उतार–चढ़ाव के बीच आगे बढ़ाना भी आवश्यक है। यही कारण है कि मैंने खुद को प्रेरित करने और सभी को प्रेरित करने के लिए हर संभव कोशिश की। पिन्टू ने पैरा स्पोर्ट्स तैराकी में 2016 में 2 स्वर्ण और 1 रजत और 1 कांस्य पदक और 2017 में 3 स्वर्ण और 1 रजत जीता है। आइए जानते हैं पिन्टू कैसे समाज के लिए रोल मॉडल बन गए।

सड़क दुर्घटना में लगी चोट– 36 वर्षीय पिंटू गहलोत के दोनों हाथ गंवा देने के बावजूद, उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 150 से अधिक स्वर्ण पदक जीते हैं। तैराकी के शौकीन पिंटू को पहले बस–ट्रक दुर्घटना के कारण कंधे में चोट लगी। इसके बाद तैराक पैरा स्विमर पिंटू ने 2016 की राष्ट्रीय चौम्पियनशिप जीती।

संघर्ष कर पाई कामयाबी– 2019 में फिर से पिंटू के साथ एक दुर्घटना हुई, जिसमें पूल की सफाई करते समय झुलस गए। उपचार के दौरान, इलेक्ट्रोक्रेडेड हाथ को आधे में काटना पड़ा। यह वही हाथ था जिसने पिंटू के कई प्रतियोगिताओं को जीता था। लेकिन हार न मानते हुए, पिंटू खुद की समस्याओं से लड़ते हुए जीत हासिल करते रहे।

खिलाड़ियों को किया तैयार – लॉकडाउन के बाद, उन्होंने एक बार फिर 20–22 मार्च को बैंगलोर में आयोजित पैरा स्विमिंग की नेशनल चौम्पियनशिप में कांस्य पदक जीतकर अपना सपना पूरा किया। इसी मंशा के साथ, पिछले कई सालों से गहलोत राजस्थान पैरा स्वींमिंग टीम के साथ कोच के रुप में जुड़े हुए हैं। उनके निर्देशन में इस दौरान खिलाड़ियों ने 150 से भी अधिक स्वर्ण पदकों पर कब्जा जमाया है।

लोगों के लिए प्रेरणापिंटू गहलोत के जीवन के उतार–चढ़ाव को समझना इतना मुश्किल है और उससे ज्यादा जीना मुश्किल है। लेकिन पिंटू लोगों को प्रेरित करके आगे बढ़ रहे हैं, जिससे नारायण सेवा संस्थान न केवल खुश हैं बल्कि हमारी शुभकामनाएं भी उनके साथ हैं। साथ में, हम पिंटू गहलोत को वित्तीय सहायता के साथ अन्य सहायता प्रदान कर रहे हैं।

– प्रशान्त अग्रवाल, अध्यक्ष

सम्पादकीय

कहा जाता है कि 'संतोषी नर सदा सुखी, अंत लोभी महा दुःखी।' इसका सामान्य सा अर्थ है कि संतोषी वृत्ति का है वह सुखी रहता है व जो असंतोषी है वह दुःखी। किन्तु संतोषी कौन? असंतोषी कौन? जीवन में संतोष क्या? असंतोष क्या है? ठीक से विचार करें तो संतोष को सबसे बड़ा धन भी कहा जाता है। किसी कवि ने लिखा भी है –

गौधन, गजधन, बाजीधन,
और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन,
सब धन धूरि समान।।

यह संतोष ही है जो हमें किसी एक सीमा पर पहुँच कर सोचने को विवश करता है कि अब कितना दौड़ूंगा? सच तो यह है कि इस दौड़ का कोई अंत नहीं है। दुनियां में और सब दौड़ों का अंतिम बिन्दु होता है पर असंतुष्ट व्यक्ति कहीं भी, किसी भी बिन्दु पर रुकना नहीं चाहता। उसे अनंत व अतृप्त क्षुधा व्याप जाती है। उसकी तृप्ति के लिये वह उचित–अनुचित का विचार भी नहीं कर पाता, तब समाज में विसंगतियों का दौर प्रारंभ होता है। असंतोष की ज्वाला बड़ी भयावह है, अतः संतोष धारण करके ही मानवता को, संबंधों को, स्वयं को बचाया जा सकता है।

कुछ काव्यमय

धीरज से उपजा संतोष
मानव को संस्कारी बनाता है।
संतोष फलित होकर हरेक को
सदाचारी बनाता है।
यह वह बीज है जो
मीठे फल देता है।
सारी व्यग्रताएं, सारी ऐषणायें
जड़मूल से हर लेता है।

- वरदीचन्द राव, अतिवि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

कण-कण में भगवान

हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि कण–कण में परमपिता परमेश्वर का वास है। इस सृष्टि की सभी रचनाएं, यहाँ तक कि हमारा शरीर भी ईश्वर की ही देन है।

एक संत अपने शिष्यों को शिक्षा के दौरान एक बात हर रोज दोहराते, 'कण–कण में भगवान है।' वे उन्हें समझाते कि ऐसी कोई वस्तु और स्थान नहीं है जहाँ भगवान नहीं हो। प्रत्येक वस्तु को हमें भगवान मान कर नमन् करना चाहिए।

एक दिन उनका शिष्य सदाशिव भिक्षा के लिए निकला। रास्ते में सामने से एक हाथी दौड़ता आता दिखाई दिया।

महावत लगातार लोगों को सावधान करता आ रहा था। तभी सदाशिव को गुरू की बात याद आ गई। वह रास्ते में ही निडरता और

भक्ति भाव से खड़ा रहा। वह मन ही मन कह रहा था, 'मुझमें भी भगवान है और इस हाथी में भी भगवान है। फिर भला भगवान को भगवान से कैसा डर?

'महावत ने जब सदाशिव को रास्ते में खड़े देखा तो वह जोर से चिल्लाया, 'सुनाई नही देता? हट जाओ! क्यों मरने पर तुले हो', लेकिन सदाशिव पर महावत की बात का कोई असर नहीं हुआ। वह अपनी जगह डटा रहा। तब तक पागल हाथी बिल्कुल नजदीक आ चुका था। उसने सदाशिव को सूंड में लपेटा और घूमा कर फेंक दिया।

सदाशिव नाली में जाकर गिरा। उसे बहुत चोट आई। उसके साथी उसे उठाकर आश्रम में ले गए। उसने कहा, 'गुरूजी, आप तो कहते हैं कि कण–कण में भगवान है। हाथी ने मेरी कैसी हालत कर दी?

'गुरू बोले, हाथी में भी भगवान का वास है, परन्तु तुम यह कैसे भूल गए कि उस महावत में भी भगवान है जो तुम्हें दूर हटने के लिए कह रहा था। तुम्हें उसकी बात भी तो सुननी चाहिए थी।

सदाशिव बोला, आपने सही कहा गुरूदेव, मैंने आपकी बात को सिर्फ सुना ही था, परन्तु उसे समझा नहीं। अतः मुझे क्षमा करे।

–कैलाश 'मानव'

धैर्य का पुरस्कार

हमें सदैव धैर्यशील बनें रहना चाहिए, क्यों कि धैर्यशीलता ही मानव की सबसे बड़ी पूंजी है। सफलता भी धैर्यशील व्यक्ति के ही कदम चूमती है। मुश्किल की घडियों में भी धैर्य ही काम आता है। हमें धैर्य कभी नहीं खोना चाहिए।

एक बार गाँव में भयंकर अकाल पड़ा। उसी गांव में एक दयालु सेठ भी था। उसके कोई संतान नहीं थी। उसने घोषणा करवाई कि वह बच्चों को प्रतिदिन रोटियाँ बाँटेगा। दूसरे दिन से ही उसके घर के आगे बच्चों की भीड़ लग गई। वे रोटी की टोकरी तक पहुँचने के लिए धक्का–मुक्की करने लगे।

रोटियाँ चूंकि बहुत तादाद में बनी थी। इसलिए टोकरी में रखी रोटियाँ छोटी–बड़ी थी। हर बच्चा चाहता था कि उसे बड़ी रोटी मिले। उन्हीं बच्चों में एक छोटी लड़की भी थी जो भीड़ से दूर खड़ी थी। जब सभी बच्चों ने रोटियाँ ले ली तो वह लड़की आगे बढ़ी। उस समय केवल एक रोटी बची थी। लड़की ने वह रोटी ली और वहां से चली गई।

दूसरे दिन भी यही क्रम जारी रहा। इस बार टोकरी में एक छोटी रोटी बची थी। लड़की ने बड़े से संतोष से वह रोटी ली और अपने घर आ गई। जब उसने रोटी तोड़ी तो उसमें उसे एक सोने का सिक्का मिला। माँ ने उसे वह सिक्का वापस करके आने को कहा। लड़की ने जब सिक्का सेठ को वापस किया तो सेठ बोला, 'मैंने यह सिक्का जानबूझकर रोटी में रखवाया था। यह मुझे उस बच्चे को पुरस्कार में देना था जो सबसे ज्यादा धैर्यवान हो। तुम इसकी हकदार हो इसलिए इस सिक्के को रख लो।'

लड़की बोली, 'सेठजी, मेरा पुरस्कार मुझे मिल चुका है, क्योंकि मुझे रोटी पाने के लिए धक्का मुक्की नहीं करनी पड़ी। इसलिए, यह सिक्का आप ही रखिए।' लड़की ने वह सिक्का सेठ को लौटा दिया। सेठ ने लड़की के पिता से कहा, मेरे कोई संतान नहीं है इसलिए आपकी पुत्री को मैं गोद लेना चाहता हूँ। उसके बाद, उस लड़की को सेठ ने गोद ले लिया और उसके परिवार की जिम्मेदारी उस दयालु सेठ ने ही निभाई।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश के पिता की अजमेर के प्रज्ञा चक्षु स्वामी शरणानन्द महाराज में गहरी आस्था थी। वे जीवन के चार सूत्र बताते थे –सुख में उदारता, दुःख में त्याग, करने में सावधान व होने में प्रसन्नता। कैलाश ने ये चार सूत्र अपने पिता से सीखे और अपने जीवन में अपनाये। दुःख में त्याग कैसे करें उसकी समझ में नहीं आया तो बताया गया कि जो चीज आपके पास नहीं है उसकी लालसा का त्याग करो।

1968 में कैलाश ने अपनी दुकान में पार्टनरशिप कर ली। दो साल तक साथ में काम किया फिर कैलाश अलग हो गया। दुकान पार्टनर ने रख ली। अब उसके पास कुछ करने को था नही तो सरकारी नौकरी के लिये आवेदन कर दिया। बड़े भाई राधेश्याम ने भी स्पिनिंग मिल की नौकरी छोड़ एक निजी स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया। राधेश्याम किशनगढ़ से कोन खरीद कर लाता तथा उन्हें चिपका–चिपकू, रंग रोगन कर वापस कड़क कर बड़ी बड़ी फैक्ट्रियों में बेच देता। कैलाश व उसका छोटा भाई जगदीश भी इस काम में मदद करने लगे और किशनगढ़ जाने लगे।

सभी भाईयों की दशा ठीक नहीं थी। राधेश्याम एक ही बुशर्ट बार–बार धोकर पहनता तो उसके छात्र कहते माड़साब को क्रीम कलर का बुषर्ट बहुत पसन्द है, इनका हर बुशर्ट इसी रंग का है। राधेश्याम यह सुनता तो उसके सीने में टीस सी उठ जाती। कैलाश इतने दिनों से बेकार था। उसे लगता कि भाई साहब की हालत ठीक नहीं है, उपर से वह उन पर भार बना हुआ है। यही विचार करते करते एक दिन कैलाश की रूलाई फूट पड़ी। राधेश्याम को पता लगा तो उसने छोटे भाई को गले लगा लिया और कहा ऐसा सोचना भी मत कि तू मुझ पर भार है, एक रोटी भी मिली तो दोनों आधी आधी खा लेंगे। कैलाश को अपने भाई पर गर्व हो उठा। इसी बीच कैलाश की पत्नी कमला ने एक पुत्री को जन्म दिया। जिसका नाम गीता रखा गया। बाद में उसका नाम कल्पना कर दिया गया। कैलाश की प्रसन्नता का पारावार नहीं था। वह सबको कहता कि उसके घर लक्ष्मी आई है। शीघ्र ही इस लक्ष्मी ने अपना चमत्कार भी बता दिया और कैलाश के जीवन को अनपेक्षित खुशियों से भर दिया।

अंश- 24